वार्तालाप–443, कलकत्ता, दिनांक–18.11.07
Disc.CD-443, dated 18.11.07 at Calcutta
Extracts

समय–15.30 –18.05
जिज्ञासु – डायनोसोर किस समय का है?
बाबा – ये डायनोसोर उस समय की बात है, जिस समय जानवर बुद्धि बनना शुरू होते हैं। द्वापरयुग के आदि से ही डायनोसोर शुरू हो जाते हैं। उससे पहले डायनोसोर जैसे जानवर नहीं होते थे, और उनकी संख्या सीमित थी। जिस जंगल में रहे होंगे, वो सारे जंगल में जब आग लगी तो सारे के सारे डायनोसोर खलास हो गये। कोई एक– आध बचा चौपाया। उसका संसर्ग जो है वो दूसरे प्राणियो से होने लगा। जैसे मगरमच्छ। और वह जाति बदल गयी। वो जाति खतम हो गयी।

Time: 15.30-18.05
Student: When did dinosaurs exist?
Baba: The dinosaurs existed when the intellects of (human) souls started becoming like that of an animal. Dinosaurs start appearing from the beginning of the Copper Age itself. Before that there were no animals like dinosaurs and their population was limited. When the jungles where they lived caught fire, all the dinosaurs perished. One or two of those four-legged creatures must have survived. It started having (physical) connection with other species like crocodiles and that species changed. That species (of dinosaurs) perished.

जिज्ञासु– ...में उसका यादगार रखा हुआ है, बोले बहुत दिन पहले वो था।
बाबा– हाँ, जहाँ कहीं भी यादगार रखी हुई है वो यादगार किसने बनायी है? बनाने वाले कौन है? अरे वो बनाने वाले यादगार कौन है? मनुष्य हैं कि देवता है कि भगवान है? मनुष्यों ने बनायी है। मनुष्य तो विकारी बुद्धि हैं। विकारी बुद्धि जो कुछ बनावट बनावेगा, उस बनावट में उसकी समझ में अंतर हो सकता है या नहीं हो सकता है? अंतर हो जाता है। वो ही वैज्ञानिक कहते रहे, और सबने माना 'डारविन थ्योरी' का कि मनुष्य पहले बंदर थे; उनको पूँछ थी, धीरे–धीरे पूँछ खतम हो गयी, वो मनुष्य बन गयें। बाद में वैज्ञानिको ने उस थ्योरी को काट दिया। तो मनुष्य भूल करता है और मनुष्य भूल सुधारता है। तो लाखों वर्ष पहले की हड्डियां मिली है डायनोसोर की, ये उनका कैलक्युलेशन में कोई गलती है। टाईम आयेगा तो अपनी गलती को सुधार लेंगे।

Student: Its memorial has been preserved in…; they said it existed long ago.
Baba: Yes, who has built the memorials wherever they exist? Who built them? Arey, who built those memorials? Are they human beings or deities or God? Human beings have built it. Human beings have a vicious intellect. Can there be a difference (i.e. defect) in the things built by a vicious intellect and its understanding or not? There is a defect. The scientists used to say the same thing and everyone believed Darwin's theory that human beings were at first monkeys; they had a tail; slowly the tail disappeared; they became human beings. Later on the scientists discarded that theory. So, man commits mistakes and then he corrects it. So, as regards the discovery of bones of Dinosaurs that are hundred thousand years old, there is a mistake in their calculation. When time comes they will correct their mistake.

समय–22.23 – 23.43
जिज्ञासु – बाबा गली–गली में गीतापाठशाला होनी चाहिये।
बाबा – हां जी, गली–गली में गीतापाठशाला होनी चाहिए, नहीं, होगी। भारत की गली–गली में गीतापाठशाला होगी। माना हर गली में गीतापाठशाला चाहिए, क्यों चाहिए? इसलिए चाहिए कि जब विनाश होगा तो भारतवर्ष में चारों ओर मिलट्री शासन होगा। बंदूक लेके हर गली में खड़ा हुआ होगा, बाहर नहीं निकलना। तो हर गली में गीतापाठशाला होगी तो सामने के दरवाजे से निकले और यूं–यूं झाँक के देखा, फटाक से क्रास हो गये। तुम्हारा बाल बांका नहीं होगा। बचेंगे। इसलिए गली–गली में गीतापाठशाला चाहिए। ऐसे टाईम पर भी तुम्हारी रोज मुरली का सुनना मिस नहीं होना चाहिए; इसलिए बोला गली–गली में गीतापाठशाला चाहिए।

Time: 22.23-23.43
Student: Baba, there should be a *Gitapathshala* in every lane.
Baba: Yes, it is not 'there should be a *Gitapathshala* in every lane', it is 'there will be a *Gitapathshala* in every lane'. There will be a *Gitapathshala* in every lane of India. It means that a *Gitapathshala* is required in every lane; why is it required? It is required because when destruction takes place there will be military rule in entire India. There will be soldiers standing with guns in every lane. People cannot come out. So, if there is *Gitapathshala* in every lane, then you can peep out of your door and cross immediately. You will not suffer any harm. You will be saved. This is why a *Gitapathshala* is required in every lane. Even in such times you shouldn't miss listening to daily Murlis; this is why it has been said that a *Gitapathshala* is required in every lane.

समय – 28.30–30.40
जिज्ञासु– ये त्रिमूर्ति चित्र एक्यूरेट नहीं है। मुरली में बोला है, ये त्रिमूर्ति चित्र एक्यूरेट नहीं है। उसको एक्यूरेट बनाना है। ये कब एक्यूरेट बनेगा?
बाबा – तीनों मूर्तियों का चित्र एक्यूरेट बनाना चाहिए; (किसी ने कहा – बनाना चाहिए) हां जी, एक मूर्ति का नहीं। तीनों मूर्तियों का चित्र एक्यूरेट बनाना चाहिए। वो तब ही बनेगा जब बनाने वाला एक्यूरेट होगा। अपनी चलन से, अपने चेहरे से, अपनी दृष्टि से, अपनी वृत्ति से बाप को प्रत्यक्ष करेंगे या जिनका चेहरा भोंडा होगा, खुद की चलन भोंडा होगी, वो त्रिमूर्ति बाप को प्रत्यक्ष करेंगे? (किसी ने कुछ कहा।) भोंडा का मतलब है, देखने में भी अच्छा नहीं लगता। (जिज्ञासु– चलन भी खराब होगा।) हां जी, चलन भी अच्छी होनी चाहिए, दृष्टि भी अच्छी होनी चाहिए, वायब्रेशन भी अच्छे होने चाहिए। उनकी सेवा का स्टॉक भी अच्छे से अच्छा होना चाहिए, तब ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे।

Time: 28.30-30.30
Student: This picture of *Trimurty* is not accurate. It has been said in the Murli that this picture of *Trimurty* is not accurate. It should be made accurate. When will it become accurate?
Baba: The picture of all the three personalities should be made accurate (Someone said - It should be made) Yes, not of one personality. The picture of all the three personalities should be made accurately. That will be possible only when the one who makes it will be accurate. Will you reveal the Father through your behaviour, through your face, through your vision, through your vibrations or will the one whose face is ugly, whose behaviour is ugly reveal the Trimurty Father? (Someone said something) Ugly (*bhonhda*) means it is not good in appearance either. (Student: The behaviour will also be bad) Yes. The behaviour should be good; the vision should be good as well as the vibrations should also be good. Their stock of service should also be the best; only then will they reveal the Father.

ऐसे तो सुना जाता है कि हैदराबाद वालों ने तीन मूर्तियों का चित्र छपाय दिया। छपा तो दिया, फिर छपाने वालो में कोई विष्णु पार्टी में आना–जाना करने लगा हो। तो दुर्गति हुई या सद्गति हुई? दुर्गति हो गयीं। चित्र छपाने से अगर बाप प्रत्यक्ष हो जाये फिर तो बड़ा साधन सच्चा निकला सहज निकल आये। फिर तो पैसे वाले जितने भी होंगे वह सब छपा देंगे।

It was heard that the (PBK) residents of Hyderabad had the picture of three personalities printed. They certainly had it printed; then someone among them who had it printed, started visiting the Vishnu party. So, did he undergo degradation or did he achieve true salvation? He underwent degradation. If the Father is revealed by printing the picture, then it will be a very true and easy method. Then all the rich ones will have it printed……. (concluded)

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.